कानपुर के अनोखे माता मंदिर में

मन्नत पूरी करने के लिए चढ़ाये जाते हैं ताले

एजेंसी (वेब वार्ता न्यूज)

मंदिर में ताला लगाने को लेकर मान्यता है कि ताला लगाने से पहले विधि-विधान से माता की पूजा की जाती है और प्रार्थना की जाती है कि उसकी मन्नत पूरी हो जाए। ऐसा करने हजारों लोग यहां आते हैं। कुछ ताला लगाने आते हैं तो कुछ ताला खोलने।

मन्नत पूरी करने के लिए तरह-तरह के उपाय किए जाते हैं, भारत देश में जितने भी पवित्र स्थान या मंदिर हैं उनमें हर जगह की अपनी अलग ही मान्यता है और उसके ही अनुसार ही वहां चढ़ावा चढ़ाया जाता है। आज हम आपको एक ऐसे मंदिर के बारे में बताने जा रहे हैं, जहां मन्नत पूरी करने के लिए ताले चढ़ाने का नियम है। इसी वजह से इनका नाम भी ताले वाली माता पड़ गया है। यह स्थान कानपुर में स्थित है, इस मंदिर में माता काली रूप में विराजमान होती हैं। इनका आकर्षक स्वरूप देखते ही बनता है। यह मंदिर अपनी अनोखी मान्यता के चलते अत्यधिक प्रसिद्ध है।

मंदिर को लेकर प्रचलित है यह अनोखी कथा

कहा जाता है कि बरसों पहले एक महिला काफी परेशान रहती थी, फिर भी नियमानुसार इस मंदिर में माँ की पूजा व दर्शनों के लिए आती थी। एक बार उसे किसी ने मंदिर में ताला लगाते हुए देखा, इसका कारण पूछने पर उसने कहा, माता ने उसे स्वप्न में दर्शन देकर ऐसा करने के लिए कहा है। उसने बताया कि ऐसा करने से उसके सभी कष्ट दूर हो जाएंगे। इसके बाद ताला लगाकर वह कई सालों तक दिखाई नहीं दी। कुछ सालों बाद मंदिर से ताला गायब था और कहा जाता है कि मंदिर की दीवार पर लिखा था मन्नत पूरी हो गई इसलिए मैं ताला खोलकर ले जा रही हूं।

कोई लगाने आता है कोई खोलने

मंदिर में ताला लगाने को लेकर मान्यता है कि ताला लगाने से पहले विधि-विधान से माता की पूजा की जाती है और प्रार्थना की जाती है कि उसकी मन्नत पूरी हो जाए। ऐसा करने हजारों लोग यहां आते हैं। कुछ ताला लगाने आते हैं तो कुछ ताला खोलने। सैंकड़ों ताले हर समय आप यहां देख सकते हैं। क्षेत्रीय लोगों की इस स्थान को लेकर बहुत आस्था है और अब तो अपने चमत्कारों के चलते इसकी ख्याति दूर-दूर तक फैल चुकी है।

जल्दी ही ताला खोलने लौटते हैं भक्त

यह मंदिर कब बनाया गया इस संबंध में कोई स्पष्ट जानकारी नहीं है। किसने इसे बनवाया इस संबंध में भी कुछ स्पष्ट नहीं है। यह कितने सालों पुराना है, इसके बारे में भी कोई नहीं बता पाता। यहां तक कि मंदिर में बरसों से माता काली की सेवा कर रहे पुजारी भी इस बात से अनभिज्ञ हैं। मंदिर को लेकर लोगों की आस्था इतनी है कि हर उम्र और वर्ग के लोगों को यहां आकर ताला लगाते और खोलते देखा जा सकता है। ऐसा भी कहा जाता है कि ताले वाली माता अपने भक्तों को ज्यादा इंतजार नहीं करातीं और भक्त जल्दी ही मंदिर पुनः ताला खोलने के लिए लौटते हैं।

एक ऐसा घर, जहां मरने के लिए पहुंचते हैं लोग

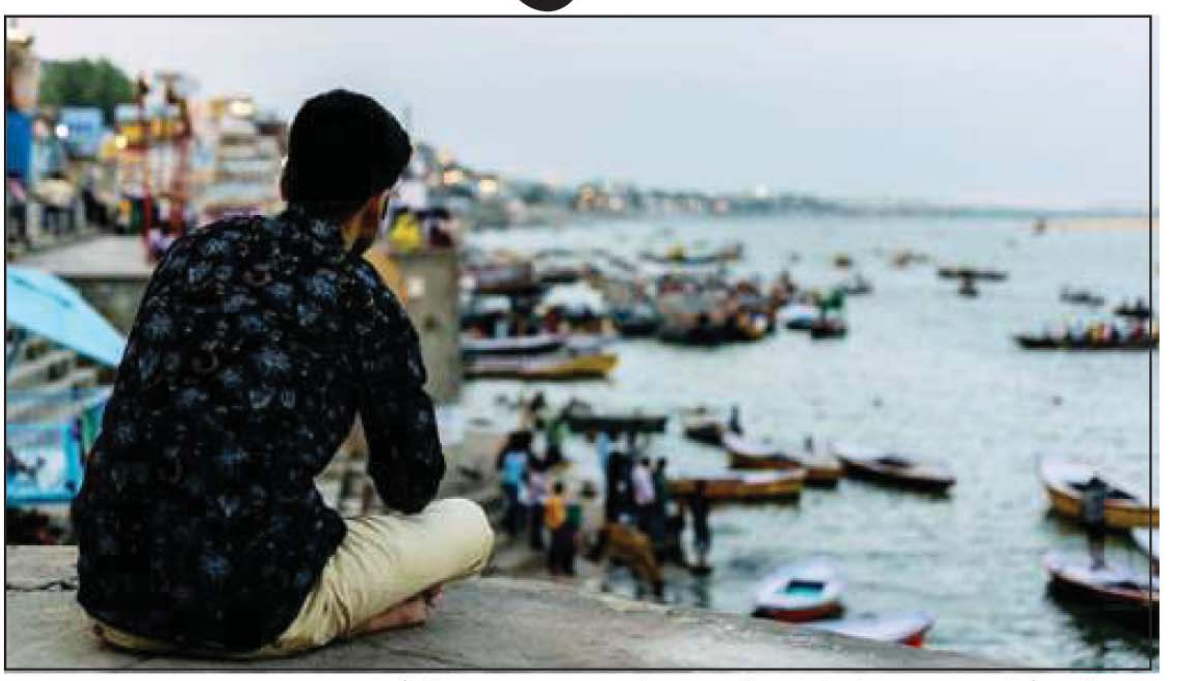

वाराणसी में एक ऐसा भवन है, जहां लोग मौत का इंतजार करने आते हैं। साल 1908 में बने इस भवन को मुक्ति भवन के नाम से जाना जाता है। यहां एक पुस्तक है, जो आने वालों का बहीखाता रखती है। इस किताब में ज्यादातर नाम वही हैं, जो मुक्ति भवन में आने के कुछ दिनों के भीतर नहीं रहे।

हर साल देश के कोने-कोने से और दुनियाभर से हिंदू धर्म पर आस्था रखने वाले हजारों लोग यहां आते हैं और अपना आखिरी वक्त बिताते हैं। अंग्रेजों के जमाने में बनी इस धर्मशाला में 12 कमरे हैं। साथ में एक छोटा मंदिर और पुजारी भी हैं. इन कमरों में केवल उन्हीं को जगह मिलती है, जो मौत के एकदम करीब हैं। मौत का इंतजार कर रहा कोई भी व्यक्ति 2 हफ्ते तक यहां के कमरे में रह सकता है।

रोजाना के 75 रुपए के अलावा ज्यादा सामर्थ्य वाले लोगों के लिए गायक मंडली भी है। इसमें स्थानीय गायक हैं जो ईश्वर और मोक्ष का संगीत सुनाते हैं। इससे बीमारों को दर्द में भी आराम मिलता है।

कमरे का रोज का शुल्क 75 रुपए होता है। इसमें सोने के लिए एक तखत, एक चादर और तकिया होता है। साथ में पीने के लिए मौसम के अनुसार घड़ा या कलश रखा रहता है। गेस्ट हाउस में आने वालों को कम से कम सामान के साथ ही अंदर आने की इजाजत मिलती है।

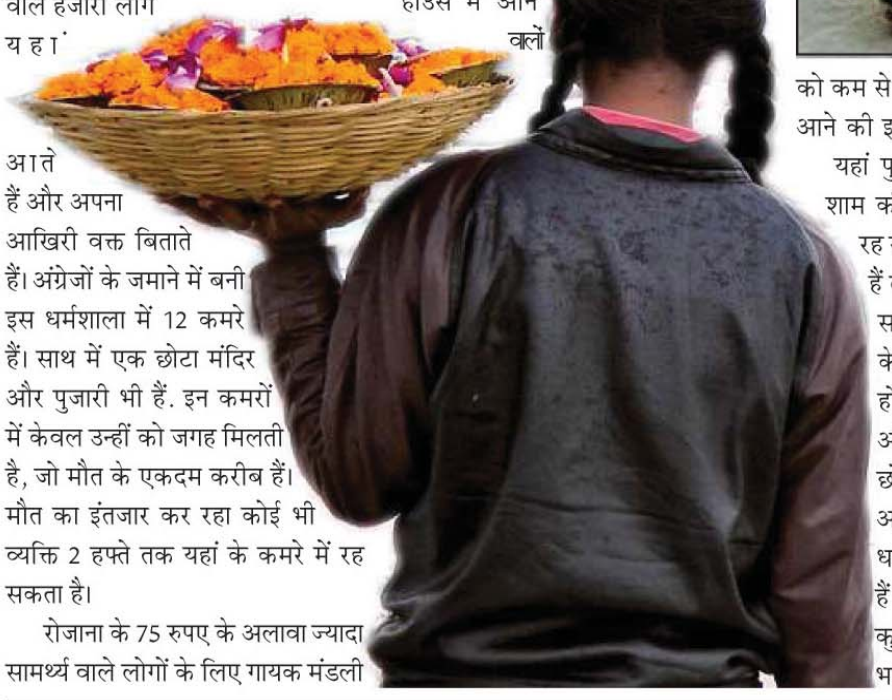

यहां पुजारी हैं जो रोज सुबह और शाम की आरती के बाद अपने यहां रह रहे लोगों पर गंगाजल छिड़कते हैं ताकि उन्हें शांति से मुक्ति मिल सके। तयशुदा वक्त यानी 2 हफ्ते के भीतर आने वाले की मौत न हो तो बीमार को अपना कमरा और मुक्ति भवन का परिसर छोड़ना होता है। इसके बाद आमतौर पर लोग बाहरी धर्मशाला या होटल में ठहर जाते हैं ताकि काशी में ही मौत मिले। कुछ वक्त बाद दोबारा भी मुक्ति भवन में जगह तलाशी जा सकती है लेकिन एक बार रह चुके व्यक्ति को वरीयता नहीं मिलती है। माना जाता है कि काशी में मरने पर सीधे मोक्ष मिलता है। इसका महत्व एक तरह से मुस्लिमों के हज की तरह है। पुराने वक्त में जब लोग कहा करते, काशी करने जा रहे हैं तो इसका एक मतलब ये भी था कि लौटकर आने की संभावना कम ही है। पहले मुक्ति भवन की तर्ज पर कई भवन हुआ करते थे लेकिन अब वाराणसी के अधिकांश ऐसे भवन कमर्शियल हो चुके हैं और होटल की तरह पैसे चार्ज करते हैं। इन जगहों पर मुक्ति भवन से विपरीत पैसे देकर चाहे जितनी मर्जी रहा जा सकता है।